एक ओंकार सतिगुरु प्रसादि
आत्मा दे नाउ !
गुरबाणी
कीर्तन
हक
कृपया अमल कर व्यवहारिक बने ।
ताकी स्मर्थ हो कर आगे बढ़ सके ॥
हक
हक
तपो तपो
तपं तपं
नमो नमो
नमं नमं
मेरे
साहिब जी
शुद्ध रूहानी सतसंग
चरन चलउ मारग गोविंद । मिटह पाप जपीऐ हरि बिंद । उसतत मन महि कर निरंकार । कर मन मेरे सत विउहार । निरमल रसना अंम्रित पीउ । सदा सुहेला कर लेह जीउ । नैनहु पेख ठाकुर का रंग । साधसंग बिनसे सभ संग । कर हरि करम स्रवन हरि कथा । हरि दरगह नानक ऊजल मथा ।
Www.9009.co.in

"चरण चलो - मारग गोबिंद"

1. चरन चलउ मारग गोबिंद । मिटह पाप जपीऐ हरि बिंद ।

अर्थ:- पैरों से ईश्वर के रास्ते पर चल । प्रभु को रत्ती भर भी जपें तो पाप दूर हो जाते हैं ।

उसतत मन मह कर निरंकार । कर मन मेरे सत बिउहार ।

अर्थ:- अपने अंदर अकाल-पुरख की महिमा कर । हे मेरे मन ! ये सच्चा व्यवहार कर ।

निरमल रसना अम्रित पीउ । सदा सुहेला कर लेह जीउ ।

अर्थः- जीभ से मीठा (नाम-) अमृत पी, (इस तरह) अपनी जान को सदा सुखी कर ले ।

नैनहु पेख ठाकुर का रंग । साधसंग बिनसै सभ संग ।

अर्थः- आँखों से अकाल-पुरख का जगत तमाशा देख, भलों की संगति में टिकने से और (कुटंब आदि का) मोह मिट जाता है ।

कर हरि करम स्रवन हरि कथा । हरि दरगह नानक ऊजल मथा । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 281)

अर्थः- हाथों से प्रभु (के राह) के काम कर और कानों से उसकी उपमा (सुन); (इस तरह) हे नानक ! प्रभु की दरगाह में सुर्ख-रू हो जाते हैं ।

a. एक पिता एकस के हम बारिक - तू मेरा गुर हाई । (612)

अर्थः- हे मित्र ! (हमारा) एक ही प्रभु पिता है, हम एक ही प्रभु-पिता के बच्चे हैं, (फिर,) तू मेरा गुरभाई (भी) है ।

b. ना को बैरी नही बिगाना - सगल संग हम कउ बन आई ।

अर्थः- हे भाई ! (अब) मुझे कोई वैरी नहीं दिखता, कोई पराया नहीं दिखता; सबके साथ मेरा प्यार बना हुआ है ।

बिसर गई सभ तात पराई । जब ते साधसंगत मोह पाई ।

अर्थः- हे भाई ! जब से मैंने गुरु की संगति प्राप्त की है, (तब से) दूसरों का सुख देख के अंदर-अंदर से जलने की आदत भूल गई है ।

जो प्रभ कीनो सो भल मानिओ - एह सुमत साधू ते पाई ।

अर्थ:- हे भाई ! (अब) जो कुछ परमात्मा करता है, मैं उसको (सब जीवों के लिए) भला मानता हूँ । ये सुमति मैंने (अपने) गुरु से सीखी है ।

सभ मह रव रहिआ प्रभ एकै - पेख पेख नानक बिगसाई ।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 1299)

अर्थ:- हे नानक ! (कह: जब से साधु-संगत मिली है, मुझे ऐसा दिखता है कि) एक परमात्मा ही सब जीवों में मौजूद है (तभी सबको) देख-देख के खुश होता हूँ ।

2. पाव सुहावे जां तउ धिर जुलदे - सीस सुहावा चरणी । मुख सुहावा जां तउ जस गावै - जीउ पइआ तउ सरणी ।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 964)

अर्थ:- वह पैर सुंदर हैं जो तेरी ओर चलते हैं, वह सिर भाग्यशाली है जो तेरे कदमों पर गिरता है; मुँह मन-मोहक लगता है जो तेरा यश गाता है, जीवात्मा खूबसूरत लगने लगती है जब तेरी शरण पड़ती है ।

a. सा रुत सुहावी - जित तुध समाली । सो कम सुहेला - जो तेरी घाली । सो रिदा सुहेला जित रिदै तूं वुठा - सभना के दातारा जीउ ।

(श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 97)

अर्थ:- हे सभी जीवों के दाते ! जब मैं तुझे अपने हृदय में बसाता हूँ, वह समय मुझे सुखदायी प्रतीत होता है । हे प्रभु ! जो काम मैं

तेरी सेवा के लिए करता हूँ, वह काम मुझे खुशी देता है । हे दातार ! जिस दिल में तू बसता है, वह हृदय शीतल रहता है।

८. जित मुख सदा सालाहीऐ – भागा रती चार । नानक ते मुख ऊजले – तित सचै दरबार । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी - 473)

अर्थः- (चाहे मनुष्य हो, चाहे स्त्री, जो भी) अपने मुंह से सदा प्रभु के गुण गाता है, उसके माथे पे भाग्यों की मणि है, भाव उनका माथा भाग्योंशाली है । हे नानक ! वही मुख उस सच्चे प्रभु के दरबार में सुंदर लगते हैं ।

३. सचै मारग चलदिआ – उसतत करे जहान । अठसठ तीरथ सगल पुंन – जीअ दइआ परवान ।

अर्थः- सच्चे रास्ते पर चलने से जगत भी शोभा (स्तुति) करता है । सभी प्राणियों के प्रति दयालु रहें—यह अड़सठ तीर्थस्थलों में स्नान करने और दान देने से कहीं अधिक पुण्यकारी कार्य है ।

जिस नो देवै दइआ कर – सोई पुरख सुजान । जिना मिलिआ प्रभ आपणा – नानक तिन कुरबान ।

अर्थः- परमात्मा कृपा करके जिस मनुष्य को (नाम जपने की दाति) देता है, वह मनुष्य (जिंदगी के सही रास्ते की पहचान वाला) बुद्धिमान हो जाता है । हे नानक ! (कहः) जिन्हें प्यारा प्रभु मिल गया है, मैं उनसे सदके जाता हूँ ।

माघ सुचे से कांढीअह – जिन पूरा गुर मिहरवान ।
(श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी – 136)

अर्थः- माघ महीने में सिर्फ वही स्वच्छ लोग कहे जाते हैं, जिस पर पूरा सतिगुरु दयावान होता है, और जिनको नाम जपने की दाति देता है ।

माघ = माघ नक्षत्र वाली पूरनमासी का महीना । नोट : इस महीने का पहला दिन हिन्दू शास्त्रों के अनुसार बड़ा पवित्र है । हिन्दू सज्जन माघी वाले दिन प्रयाग तीर्थ का स्नान करना बहुत पुण्य का कर्म समझते हैं ।

a. जिनी नाम धिआइआ – गए मसकत घाल । नानक ते मुख उजले – केती छुटी नाल । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी – 8)

अर्थः- हे नानक ! जो मनुष्यों ने अकाल-पुरख का नाम स्मरण किया है, वे अपनी मेहनत सफल कर गये हैं । (अकाल-पुरख के दर पर) वे उज्जवल मुख वाले हैं और (और भी) कई जीव, उनकी संगत में (रह के) ('कूड़ की पालि' गिरा के माया के बंधनों से) आज़ाद हो गए हैं ।

b. विण सच सोच न पाईऐ – भाई साचा अगम धणी । आवण जाण न चुकई – भाई झूठी दुनी मणी । गुरमुख कोट उधारदा – भाई दे नावै एक कणी । (श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी – 608)

अर्थः- हे भाई ! सदा स्थिर प्रभु (के नाम) के बिना आत्मिक पवित्रता प्राप्त नहीं हो सकती । वह सदा स्थिर अगम्य (पहुँच से परे) मालिक ही (पवित्रता का श्रोत है) । हे भाई ! (प्रभु के नाम के बिना)

जनम-मरण (का चक्कर) खत्म नहीं होता। दुनिया के पदार्थों का घमण्ड झूठा है (ये गुमान तो ले डूबता है, जनम-मरण में डाले रखता है)। (दूसरी तरफ) हे भाई ! जो मनुष्य गुरु के सन्मुख रहता है, वह हरि नाम का एक कण-मात्र ही दे के करोड़ों को (जनम-मरण के चक्कर में से) बचा लेता है।

(पाठी माँ साहिबा)

»»हक««»»हक««»»हक««

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि – "रागमई प्रकाशित सुगधित आवाज़ विशेष"। इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं – गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नंही हैं।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला। गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी।"

एक ओंकार सतिगुरू प्रसादि
गुरबाणी
कीर्तन
हक
कृपया अमल कर व्यवहारिक बने
ताकी स्मर्थ हो कर आगे बढ़ सके ।।
मेरे साहिब जी
सतसंग
चरन चलउ मारग गोबिंद । मिटह पाप जपीऐ हरि बिंद । उसतत मन मह कर निरंकार । कर मन मेरे सत बिउहार । निरमल रसना अम्रित पीउ । सदा सुहेला कर लेह जीउ । नैनहु पेख ठाकुर का रंग । साधसंग बिनसै सभ संग । कर हरि करम स्रवन हरि कथा । हरि दरगह नानक ऊजल मथा ।
Www.9009.co.in